संस्कृत पत्रकारिता : ऐतिह्यविमर्श

बिपिन कुमार झा[359] & अभयधारी सिंह[360]

==========

कूटशब्द- संस्कृतपत्रकारिता, संस्कृतपत्रकारिता का उद्गम, प्रिण्टमीडिया, आडियो-वीजुअल मीडिया, ई-जर्नल, दैनिकी, साप्ताहिकी, पाक्षिकी, मासिकी, द्वैमासिकी, त्रैमासिकी, चतुर्मासिकी, षाण्मासिकी, वार्षिकी, द्विवार्षिकी.

शोधसंक्षिप्तिका-

जागतिक त्रिविध तापों से अनुस्यूत मनुज हमेशा आधिभौतिक आधिदैविक तथा आध्यात्मिक तापों से मुक्त होने के लिए एवं समग्र उत्कर्ष हेतु निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। जिसका श्रीगणेश जागतिक उपाय[361] से ही होता है। किन्तु यह जागतिक उपाय वैयक्तिकमात्र न होकर समग्र एवं समावेशी दृष्टिगत होता है जो *'वसुधैव कुटुम्बकं'* को चरितार्थ करता है। *'वसुधैव कुटुम्बकं'* का भाव राष्ट्रोत्कर्ष के नींव पर ही खडा रहता है[362]। अस्तु प्रकृत शोधपत्र की परिधि समस्त भारतवर्ष प्राथमिक रूप में है। लोकतन्त्र को आत्मसात किये हुए भारतवर्ष में विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के साथ ही पत्रकारिता प्रमुख चार स्तम्भ हैं जिस पर समग्रराष्ट्र की समावेशी उन्नति निर्भर करती है। पत्रकारिता एक विशिष्ट लेखनविधा है जिसके माध्यम से चिन्तनशीलवर्गों के द्वारा समसामयिक समाचारों, विचारों, भावों का सम्प्रेषण जनसामान्य तक होता है। यद्यपि आधुनिककाल में नवजागरण, औद्योगिक क्रान्ति एवं अभिनूतन सामाजिक-राजनीतिकचिन्तकों के द्वारा इस विधा को अत्यधिक विस्तार एवं गहनता प्रदान किया गया तथापि इस विधा की प्राचीनता प्राचीनकाइक शिलालेख, स्तम्भलेख, गुहाभित्ति आदि से भी प्रमाणित है। अंग्रेजी, हिन्दी आदि भाषाओं के बंगालगजट, उदण्डमार्त्तण्ड, कविवचनसुधा, संवादकौमुदी आदि पत्र-पत्रिका के माध्यम से प्रारम्भ हुआ एवं संस्कृतभाषा से विस्तार प्राप्त पत्रकारिता के बीज मेघदूतम एवं अभिज्ञानशाकुन्तलम में सहज दृष्टिगोचर होता है उक्त पत्रकारिता का वर्गीकरण विविध विभागों उपविभागों में किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृतविषयक पत्रकारिता की चर्चा की जा रही है। आरम्भ से आज तक संस्कृतपत्रकारिता की विकासयात्रा को इस शोधपत्र के

---

1. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान गरलीपसर में साहित्यविभागाध्यापक, Cell for Indian Sciences and Technology in Sanskrit, HSS, IIT, Bombay में Ph. D हेतु शोधरत।

[360] असोसिएट प्रोफ़ेसर, इतिहास, निर्मल्लीमहाविद्यालय, निर्मल्ली

[361] कठोपनिषद् प्रथम अध्याय, प्रथमावल्ली (यम-नचिकेता संवाद)

[362] राष्ट्रमङ्गलम्, यजुर्वेद..

माध्यम से आपके सम्मुख उपस्थापित करने का आयास किया जा रहा है। *संस्कृतपत्रकारिता कब और कैसे शुरू हुई, स्वतन्त्रता से पूर्व तक यह किस प्रकार जनमानस को उन्नति हेतु प्रेरक रही, स्वतन्त्रता के अनन्तर इसकी दशा एवं दिशा कैसी रही, समसामयिक सन्दर्भ में यह किन-किन स्वरूपों में हमारे समक्ष प्रस्तुत है, आदि से अद्यतन संस्कृतपत्र-पत्रिकाओं की वर्गीकृत (दैनिकी, साप्ताहिकी, पाक्षिकी, मासिकी, द्वैमासिकी, त्रैमासिकी, चतुर्मासिकी, शाण्मासिकी, वार्षिकी, द्विवार्षिकी, मुद्रित, श्रव्य-दृश्य, ई-पत्रिका) सूची एवं विवरण, संस्कृतपत्रकारिता के समसामयिक सन्दर्भों में परिवर्तित स्वरूपों का औचित्य एवं उपादेयता, संस्कृतपत्रकारिता के मार्ग में आने वाले व्यवधान एवं समाधान* इन बिन्दुओं का यथापेक्षित विवेचन एवं विश्लेषण के माध्यम से संस्कृतपत्रकारिता के सन्दर्भ में सांगोपांग प्रस्तुति ही प्रकृतशोधपत्र का अभीष्ट है। इस शोधपत्र में सन्दर्भादि हेतु *APA* शैली का अनुगमन किया गया है। यह शोधपत्र लेखकद्वय के मौलिक चिन्तन पर आधृत है अस्तु इस शोध का किसी भी प्रकार से उपयोग लेखकद्वय के लिखित अनुमति के बिना वैधानिक दृष्टि से अनुचित होगा। इस शोध में प्रयुक्त आँकडे विविधग्रन्थों, अन्तर्जालों एवं अनुभवी व्यक्तियों के साक्षात्कार के माध्यम से संकलित हैं अस्तु लेखकद्वय उन सभी सन्दर्भित ज्ञाननिधियों के प्रति आभारी है।

पत्रकारिता : परिचय एवं ध्येय

'पत्रं करोतीति पत्रकारः' तथा 'पत्रपत्रिकाणां लेखन-पठन मुद्रण-स्वभावत्त्वं कर्मत्वं वा पत्रकारिता' (सागर, २०११) संस्कृतव्युत्पत्ति के अनुसार पत्रकारिता लेखन-पठन-मुद्रण से सन्दर्भित है जो जनसामान्य के सूचनार्थ तथा राष्ट्र के अभिवृद्धि के निमित्त की जाती है। जो जनजागरण, राष्ट्रियभावाना उद्रेक, कुप्रथा उन्मूलन, अनैतिकता के मानमर्दन में उपादेय है। पत्रकारिता का लक्ष्य सत्यं शिवं सुन्दरं सदृश सूचनाप्रदान करना, मनोरञ्जन करना एवं जनचेतना का प्रसार करना है। सूचना इस तरह की हो जो सत्य हो। मनोरञ्जन वही जो शिवमय अर्थात् कल्याणकर हो। जनचेतना तो स्वाभाविक रूपसे सुन्दर होना चाहिये। यहाँ यह प्रश्न अनिवार्य हो जाता है कि क्या वर्तमान में पत्रकारिता उक्त सत्यं शिवं सुन्दरं के भाव को अन्वित कर हमारे समक्ष प्रस्तुत है? इसका समाधान पाठकों पर छोडते हैं।

संस्कृतवाङ्मय एवं पत्रकारिता-

पत्रकारिता का प्रकारान्तर सन्दर्भ महाभारत, रामायण, मेघदूत, शाकुन्तलं, आचार्यशङ्कर की कृति, प्रसन्नराघव आदि ग्रन्थों मे बहुशः प्राप्त है।

आचार्य शंकरकृत मोहमुद्गर स्तोत्र में यह निखर कर हमारे समक्ष लोककल्याणकर रूप में प्रस्तुत होती है। जहाँ आचार्य ने जनसामान्य हेतु एक सन्देश दिया है कि ऐहलौकिक मोह में व्याप्त होकर पारलौकिक सत्ता को न भूले-

यावद्वित्तोपार्जनशक्तः तावन्निजपरिवारो रक्तः।

पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे[363] ॥

संस्कृतवाङ्मय में बहुशः वार्ताहरण, वृत्तप्रेषण, संवादसंचय, उद्घोषणा-ज्ञापन, सन्धि-हस्ताक्षरांकन, सामंजस्य-पत्रों के मुद्रण एवं प्रमाणीकरण के विषय समुपलब्ध है। इसके अनन्तर गोस्वामी तुलसीदास का रामचरितमानस प्रबल प्रमाण हैं[364] इसके अनन्तर शिलालेख, गुहाभित्ति, स्तम्भलेख एवं ताडपत्र आदि के माध्यम से यह पुष्पित-पल्लवित दृष्टिगोचर है। शिलालेख आदि तो इतना प्रथित रहा कि कालिदास सदृश मनीषियों के कालनिर्धारण हेतु प्रबल प्रमाण बनें[365]।

विविध संस्कृत पत्र-पत्रिकाएं-

यदि संस्कृतपत्रिकारिता की आरम्भिक स्वरूप की चर्चा करें तो सर्वप्रथम **विद्योदय** को पाते हैं। स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली यह एक संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1871 में प्रारम्भ हुई । उसके बाद निरन्तर पत्रपत्रिकाओं का प्रकाशन कार्य शुरू हुआ, जिसकी चर्चा हम इस प्रकार कर सकते हैं। **संस्कृत-चन्द्रिका** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1893 में प्रारम्भ हुई । **संस्कृत-रत्नाकर** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1904 में प्रारम्भ हुई । **बंगाल साहित्यपरिषत् पत्रिका** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् में प्रारम्भ हुई। **काशीविद्यासुधानिधिः** जिसका अपर नाम था **(पण्डित)** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली यह एक मासिक संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1866 में काशी मे प्रारम्भ हुई । **विद्यार्थी** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1871 में प्रारम्भ हुई । **षड्-दर्शनचिन्तनिका** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1875 में प्रारम्भ हुई । **प्रयागधर्मप्रकाश** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1875 में प्रारम्भ हुई । **षड्धर्मामृतवर्षिणी** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1875 में प्रारम्भ हुई । **कामधेनुः** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1879 में प्रारम्भ हुई । **विद्यार्थी** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली यह एक पाक्षिक संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1881 में उदयपुर में प्रारम्भ हुई । **नाटककाव्यादर्श** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1882 में प्रारम्भ हुई । **आर्यः** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1883 में प्रारम्भ हुई । **धर्मोपदेशः** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1883 में प्रारम्भ हुई । **ब्रह्मविद्या** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1885 में प्रारम्भ हुई । **द्वैभाषिक** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली यह एक संस्कृत-बांग्ला संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1887 में बिहार में प्रारम्भ हुई । **सूक्तिसुधा** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली यह एक मासिक संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1903 में काशी में प्रारम्भ हुई । **वैष्णवसन्दर्भः** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली

---

[363] मोहमुद्गरस्तोत्र ८

[364] रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड दोहा १५७

[365] एहोल शिलालेख

संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1903 में प्रारम्भ हुई । **मित्रगोष्ठी** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली यह एक मासिक संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1904 में प्रारम्भ हुई । **मिथिलामोदः** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1905 में प्रारम्भ हुई । **चित्रवाणी** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1913 में प्रारम्भ हुई । **अमृतवाणी** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली यह एक वार्षिक संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1941 में बंगलुरू में प्रारम्भ हुई । **सरस्वतीसुमनः** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1942 में BHU में प्रारम्भ हुई । **अमरभारती** - स्वतन्त्रता पूर्व प्रकाशित होने वाली संस्कृत पत्रिका थी जो सन् 1944 में काशी में प्रारम्भ हुई । स्वतन्त्रता के अनन्तरं दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में मुख्यरूप से **विजयः** (1961), **सुधर्मा** (1970) प्रमुख हैं । जिसमें सुधर्मा निरन्तर प्रकाशित होती रही है। यह मैसूर से प्रकाशित होती है। इसे डाक से प्राप्त किया जा सकता है साथ ही इसके साइट पर भी पढा जा सकता है।

प्रमुख पत्र-पत्रिकाएं-

साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं में मुम्बई से प्रकाशित सुरभारती (1947), संस्कृतं भवितव्यं (1951), वैजयन्ती (1953), भाषा (1955), गाण्डीवम् (1964) इत्यादि प्रमुख हैं। जिनमे गाण्डीवम् निरन्तर रही है। **पाक्षिकपत्र-पत्रिकाओं** में शारदा (1958) प्रमुख है जो अब ई-शारदा के रूप में एक सुसज्जित वेब के रूप में उपलब्ध है। **मासिक पत्र-पत्रिकाओं** में ब्रह्मविद्या(1947), वेदवाणी, भारती, संस्कृतसन्देशः (1953, नेपाल), गीता, गुरुकुलपत्रिका, देववाणी, मधुमती, भारतीविद्या आदि प्रमुख हैं। **द्वैमासिक पत्रपत्रिकाओं** में प्रियम्बदा, प्रियवाक्, भारतमुद्रा प्रमुख है। **त्रैमासिक पत्रपत्रिकाओं** में संस्कृतप्रभा, पाटलश्रीः, सागरिका, संगमनी, संविद्, गुंजारवः, हितकारिणी, मनीषा प्रमुख है। **षण्मासिक पत्र-पत्रिकाओं** में संस्कृतप्रतिभा, मागधम् प्रमुख है। **वार्षिक पत्र-पत्रिकाओं** मेंतरङ्गिणी (1958), ज्ञानवर्द्धिनी, सुरभारती, प्राची प्रमुख हैं। **आधुनिक पत्रपत्रिकाओं** में गीर्वाणसुधा, लोकसुश्रीः, सत्यानन्दम्, अभिनवसंस्कृतम्, अभिनवसंस्कृतम्, संभाषणसन्देशः (1994), रावणेश्वरकाननम्, आर्षज्योतिः, अजस्रा, अर्वाचीनसंस्कृतम्, दूर्वा, विश्वभाषा, संस्कृतविमर्शः, भास्वती, परिशीलनम्, आरण्यकम्, शोधप्रभा, दृक्, कथासरित्, प्राच्यज्योतिः, मनीषा, लोकप्रज्ञा आदि प्रमुख हैं। **ई पत्र-पत्रिकाओं** की शुरुआत लेखक (बिपिन झा) के द्वारा आई.आई.टी मुम्बई से प्रथमतः संस्कृतम् नाम से 2009 में गतिविधि हुई। इससे पूर्व स्वतन्त्र रूप से निबन्धित कोई भी ई पत्रिका नहीं थी। संस्कृत विद्वानों और शोधछात्रों में संस्कृत ई पत्रिका की वांछा के कारण जाह्नवी संस्कृत ई जर्नल का निबन्धन www.jahnavisanskritejournal.in के रूप मे दिसम्वर 2009 में हुआ किन्तु कतिपय तकनीकि कारणों से विफल रही जो पुनः जनवरी 2010 में www.jahnavisanskritejournal.com के रूप में निबन्धित हुआ। इसके अस्तित्व में आने के अनन्तर अनेक ई जर्नल अस्तित्व में लानें का प्रयास किया गया किन्तु अद्यतन यह एकमात्र ऐसी संस्कृत ई शोधपत्रिका है जो पूर्णतः स्वतन्त्र, निःशुल्क (अनिवार्य शुल्करहित) केवल और केवल पत्रिका निमित्त पत्रिका के नाम से निबद्ध है जो ISSN युक्त पीअर-रिव्यूड, रेफ्रीड हो। इसके टीम में अनेकों विश्वविद्यालय के कुलपतियों के अतिरिक्त आचार्य, उपाचार्य, सहाचार्य तथा शोधच्छात्र है। यह पत्रिका विभिन्न विश्वविद्यालयों में अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से संस्कृत प्रचारप्रसार एवं शोध

के स्तर को बेहतर बनाने हेतु कटिबद्ध है। यह पत्रिका सारस्वत-निकेतनम् अन्तर्जाल सम्बद्ध है जिसकी नींव पण्डित तुलानन्द झा (राष्ट्रपतिसम्मानित) के द्वारा रखी गयी थी। पत्रिका के मुख्यसम्पादक मा.सं.वि.म.भारतसरकाराधीनस्थ पूर्वशिक्षाविद् डा. सदानन्द झा (लेखक) हैं। इसकी वेबडिजाइनिंग, सम्पादन एवं प्रकाशन बिपिन झा द्वारा किया जाता है। **अन्य ई पत्रिकाओं** में- sudharmaepapertoday.com एवं अन्यान्य वेबसाइट है जिनमें प्रायः सभी पराधीन साइट हैं जैसे wordpress.com, blogspot.com

संस्कृतपत्रकारिता और समस्याएं-

संरक्षणाभाव एवं धनाभाव संस्कृतपत्रकारिता हेतु बहुत बडी बाधा है। सरकार के द्वारा संस्कृत पत्र-पत्रिकाएं सामान्यतया उपेक्षित ही रही है। सक्षम व्यक्ति भी यथाशक्ति इसके संरक्षण में सहयोग नहीं करते और यही कारण बहुतों संस्कृत पत्र-पत्रिकाएं धनाभाव के कारण कालकवलित हो गये।

पाठकों की न्यूनता संस्कृत पत्रकारिता के मार्ग में दूसरी बडी बाधा है। बहुत कम ऐसे पाठक हैं जो पत्रपत्रिकाओं को पश्रय दे। यही कारण है कि संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में बारंबार ग्राहकता की बात करने पर भी पाठकों की न्यूनता दृष्टिगत होती है।

लेखकों का अभाव तीसरी बडी समस्या है। एक प्रकाशक एवं सम्पादक के रूप में इस सन्दर्भ में बहुत ही कटु अनुभव रहा है। एक तो येन-केन-प्रकारेण बाली पद्धति समस्या के रूप में आती है अथवा बारम्बार निवेदन के बाबजूद समुचित लेख प्राप्त नहीं होते। इस कारण बहुत सारी संस्कृत पत्रपत्रिकाएं बन्द हो गये।

तकनीकि ज्ञान का अभाव- संस्कृतपत्र-पत्रिका के अभ्युदय एवं प्रसार को प्रभावित करने बाले कारणों मे अनन्यतम है। इसके कारण लेखक-प्रकाशक के मध्य तारतम्य नहीं बैठ पाता। लेखक योग्य हैं, पर अपनी अभिव्यक्ति को कैसे अभिव्यक्त करें यह नही समझ पाते हैं। संगणक का ज्ञान एवं शोधप्रविधि का ज्ञान यदि हो तो सहजतया इस समस्या का समाधान हो सकता है।

निष्कर्ष-

संस्कृतपत्रकारिता वर्तमान समय में अत्यन्त ही आवश्यक स्तम्भ के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत है। इसके माध्यम से हम उन अर्वाचीन ग्रन्थों में छुपे अमूल्यनिधियों का साक्षात्कार कर पाते हैं जो सामान्य अध्ययन अध्यापन से सहज सम्भव नहीं है साथ ही वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हो रहे अत्याधुनिक प्रौद्योगिकविकास में उन ग्रन्थों की निधियों का उपयोग

कर भूमण्डलीकृत इस विश्व को समग्रोत्कर्ष के मार्ग पर अग्रसारित कर पाते हैं एवं संस्कृतजगत् को भी नूतनतकनीकिगतदृष्टि दे पाते हैं। आवश्यकता बस इस बात की है कि भारतीयता पर चर्चा से पूर्व भारत क्या है इसे समझने के लिये समस्त भारत को प्रेरित किया जाय ताकि भारत पुनः एकबार विश्वगुरु की पदवी प्राप्त कर सके। नही तो वह दिन दूर नहीं जब हम पूर्णतः सांस्कृतिक रूप से पाश्चात्य की दासता स्वीकार करने को विवश होंगे।

अनुशीलितसन्दर्भसूची

1. Anekārthasaṃgraho Nāma Kośaḥ (Hemacandraḥ), (1969), Hoshing Jagannath, Shastri, Varanasi, caukhambhā series office.
2. Maṃkhakośa (Maṃkhakṛta), (1972), Zakaria, Thiyodore. (Ed.), Varanasi, Caukhambhā series office
3. Medinīkośaḥ (Medinīkāraḥ) Hoshing, Pt. Jagannath Shastri (Ed.) VS. 2064, Varanasi, Caukhambhā Saṃskṛta Saṃsthāna
4. Sagar, Baladevanand, Saskritpatrakarita, Sanskrit Bharati, 2011
5. Jha, V N (Ed.), Sanskrit writings in Independent India.
6. Omkar, (2006), Tribhāṣīya kośa, Mathurā, Candragaja Saṃsthāna.
7. Rishikesh, Dr. Ramarup, (1993), ādarśa hindī saṃskṛta kośa, Varanasi, caukhambhā vidyābhavana.
8. Sharma, V. Venkataraj., pāṇinivyākaraṇodāharaṇakośaḥ, Tirupati, Rashtriya Sanskrit Vidyapith.
9. Taneja, Pushpalata., (2001), samekita hindī-saṃyuktarāṣṭra bhāṣā kośa, New Delhi, kendrīya Hindī nideśālaya.
10. Venkatesh, (2010), vyavahārakośaḥ, Bangalore, S. Venkatesh.
11. Verma, phuladeva śahay, (1989), viśva Hindi kośa, Varanasi, nāgarī pracāraṇī sabhā.